नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

क्या प्रकृति दे रही है अंतिम चेतावनी?

वेनेजुएला में बुधवार को आए विनाशकारी भूकंप ने एक बार फिर पूरी दुनिया को यह सोचने पर मजबूर कर दिया है कि आधुनिक विकास की अंधी दौड़ हमें किस दिशा में ले जा रही है. रिक्टर स्केल पर 7.2 और 7.5 तीव्रता के दो शक्तिशाली झटकों ने कुछ ही क्षणों में हजारों लोगों का जीवन बदल दिया. अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (यूएसजीएस) द्वारा व्यक्त की गई आशंका कि मृतकों की संख्या दस हजार से लेकर एक लाख तक पहुंच सकती है, इस त्रासदी की भयावहता को दर्शाती है.

भूकंप मूल रूप से एक प्राकृतिक घटना है, जिसका सीधा संबंध पृथ्वी की टेक्टोनिक प्लेटों की गतिविधियों से होता है. यह कहना वैज्ञानिक दृष्टि से उचित नहीं होगा कि किसी एक भूकंप के लिए सीधे मानव गतिविधियां जिम्मेदार हैं. लेकिन यह भी उतना ही सच है कि मानव द्वारा प्रकृति के साथ किए जा रहे लगातार हस्तक्षेप ने प्राकृतिक आपदाओं की विनाशक क्षमता को कई गुना बढ़ा दिया है.

आज पूरी दुनिया ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन और अनियंत्रित संसाधन दोहन के दुष्परिणाम भुगत रही है. जंगलों की अंधाधुंध कटाई, पर्वतों का अत्यधिक खनन, नदियों के प्राकृतिक प्रवाह में हस्तक्षेप और शहरीकरण की बेतहाशा रफ्तार ने धरती के प्राकृतिक संतुलन को कमजोर किया है. वैज्ञानिक वर्षों से चेतावनी देते रहे हैं कि पृथ्वी के पर्यावरणीय तंत्र पर बढ़ता दबाव भविष्य में अधिक गंभीर और जटिल आपदाओं को जन्म दे सकता है. वेनेजुएला की त्रासदी इसी व्यापक संदर्भ में देखी जानी चाहिए. भूकंप के बाद 20 से अधिक आफ्टर शॉक्स का आना, बड़े पैमाने पर भवनों का ढहना और महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे का नष्ट होना केवल भूगर्भीय घटना की कहानी नहीं है. यह उन विकास मॉडलों पर भी सवाल है जो प्राकृतिक जोखिमों को नजरअंदाज कर केवल आर्थिक लाभ को प्राथमिकता देते हैं. यदि शहरों की योजना भूकंप-रोधी मानकों के अनुरूप न हो, यदि पर्यावरणीय प्रभावों का गंभीर अध्ययन न किया जाए और यदि प्राकृतिक चेतावनियों की अनदेखी की जाए, तो आपदाएं और अधिक घातक बन जाती हैं.

ग्लोबल वार्मिंग का एक और प्रभाव यह है कि दुनिया भर में चरम मौसमी घटनाओं की आवृत्ति और तीव्रता बढ़ रही है. कहीं भीषण गर्मी है, कहीं विनाशकारी बाढ़ है, कहीं सूखा है और कहीं भूस्खलन. पृथ्वी का पर्यावरणीय संतुलन जितना कमजोर होगा, समाजों की आपदाओं से निपटने की क्षमता भी उतनी ही कम होगी. इसलिए प्राकृतिक आपदाओं को केवल भाग्य या नियति का प्रश्न मानकर नहीं छोड़ा जा सकता.

वेनेजुएला की यह त्रासदी पूरी मानवता के लिए चेतावनी है. विकास आवश्यक है, लेकिन वह प्रकृति के साथ संघर्ष करके नहीं, बल्कि उसके साथ संतुलन बनाकर होना चाहिए. दुनिया को अब पर्यावरण संरक्षण, टिकाऊ विकास, जिम्मेदार खनन और आपदा-प्रतिरोधी बुनियादी ढांचे को प्राथमिकता देनी होगी. अन्यथा प्रकृति बार-बार यह याद दिलाती रहेगी कि उसके नियमों की अनदेखी की कीमत अंततः मानव सभ्यता को ही चुकानी पड़ती है. वेनेजुएला के मलबे से उठती चीखें केवल एक देश का दर्द नहीं हैं, बल्कि पूरी दुनिया के लिए एक गंभीर संदेश हैं कि प्रकृति को जीतने की नहीं, उसके साथ सामंजस्य स्थापित करने की आवश्यकता है. तभी भविष्य सुरक्षित और स्थायी बन सकेगा.

महाकौशल की डायरी

सिस्टम से हारी मां-बेटी, सीएम को सुनानी पड़ी व्यथा...!

अविनाश दीक्षित

जब थक हारकर, बेबस मातृशक्तियां किसी अधिकारी के पैरों में गिरकर न्याय की भीख सार्वजनिक रूप से मांगने लगें तो स्पष्ट है कि सिस्टम की उदासीनता से वह त्रस्त हो चुकी हैं और न्याय के लिए उनके पास पैरों में गिरकर भीख मांगने के सिवा कोई रास्ता नहीं बचा है. बीते बुधवार को घमापुर निवासी पीड़ित मां-बेटी को मौका मिला तो उन्होंने जबलपुर पहुंचे मुख्यमंत्री का काफिला रोका और रोकर अपनी व्यथा सुनाई. यह बेहद मार्मिक मामला जबलपुर से जुड़ा है जहां जबलपुर पुलिस अधिकारियों के साथ घमापुर थाना पुलिस के द्वारा आरोपियों पर एक्शन नहीं लिया गया तो मां-बेटी जिला प्रशासन के दरवाजे पर पहुंच गए और कलेक्ट्रेट में सार्वजनिक रूप से घुटनों में बैठकर रोते हुए न्याय की भीख मांगने लगे. जिसने ये नजारा देखा उसने पुलिस की कार्यप्रणाली पर गंभीर प्रश्न खड़े किए.

पीड़ित महिला को भरोसा देते हुए मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव

दरअसल पीड़ित महिला ने प्रशासन को दिए आवेदन में आरोप लगाया है कि वर्ष 2022 से उसका परिवार लगातार प्रताड़ना और धमकियों का सामना कर रहा है और अपने आप को आरोपियों के सामने असुरक्षित महसूस कर रहा है. महिला का पति आरोपियों के हमले से घायल होकर अस्पताल में इलाजरत है. महिला और उसकी बेटी अर्से से क़ानून के रखवालों के लगभग हर दरवाजे पर दस्तक दे रही हैं, किन्तु न्याय - सुरक्षा की गुहार नक्कारखाने में तूती की आवाज की तरह दम तोड़ रही है. फिलहाल जबलपुर कलेक्टर ने घमापुर टीआई को त्वरित निर्देश देते हुए कह दिया था कि महिला व उसकी बेटी की मांगों पर त्वरित कार्रवाई की जाए, लेकिन हुआ ये कि बुधवार को जबलपुर प्रवास पर पहुंचे मुख्यमंत्री मोहन यादव के समक्ष पीड़ित महिला को अपनी व्यथा सुनानी पड़ी.

सीएम तक पहुंची व्यथा की कथा का सार इतना ही है कि संबंधित पुलिस अधिकारियों को उनके आला अधिकारियों ने जमकर फटकार लगाई है. मामले में आगे क्या होगा यह कहना अभी मुश्किल है मगर पूरे मामले ये सवाल अभी भी खड़े हैं कि यदि कोई पीड़ित परिवार अपनी शिकायत लेकर थाने और संबंधित वरिष्ठ अधिकारियों और प्रदेश के मुखिया तक पहुंचने के बाद भी खुद को असुरक्षित महसूस करे, तो उसे न्याय के लिए किस दरवाजे पर जाना चाहिए..? इस मामले ने एक परिवार की पीड़ा नहीं, बल्कि व्यवस्था से उम्मीद और निराशा के बीच झूल रहे आम नागरिक की मानसिक स्थिति को भी दर्शा दिया है.

धृतराष्ट्र बने जिला अध्यक्ष, संघर्ष करने वाले कांग्रेसियों का अपमान जारी...?

कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे एवं लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी द्वारा संगठन सृजन अभियान के माध्यम से पार्टी को मजबूत करने और जमीनी कार्यकर्ताओं को सम्मान दिलाने की मंशा के विपरीत इन दिनों बालाघाट जिला कांग्रेस में लगातार असंतोष, गुटबाजी और कार्यकर्ताओं की उपेक्षा के आरोप सामने आ रहे हैं. कांग्रेस कार्यकर्ताओं का कहना है कि जिला नेतृत्व संगठन को मजबूती देने के बजाय कुछ व्यक्तियों के प्रभाव में काम कर रहा है, जिससे समर्पित कार्यकर्ताओं का मनोबल टूट रहा है. दरअसल जिला मुख्यालय से करीब 100 किलोमीटर दूर बिरसा क्षेत्र से आने वाले विधायक एवं जिला कांग्रेस अध्यक्ष संजय उइके को पुनः संगठन की कमान सौंपने से जुड़ा मामला है, जिसके चलते संगठन में विरोध के स्वर फूट पड़े हैं. इसके अलावा जिला कांग्रेस में हुई नई नियुक्तियों को लेकर आरोप लग रहे हैं कि जिन लोगों को महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त किया गया है, उनमें से कई चेहरे ऐसे हैं जिन्हें पार्टी के कार्यक्रमों और आंदोलनों में कभी सक्रिय भूमिका निभाते देखा नहीं गया. जबकि सालों से कांग्रेस के लिए संघर्ष करने वाले कार्यकर्ताओं की अनदेखी की गई है. खबर है कि राजा खान की नियुक्ति को लेकर भी चर्चाएं तेज हैं. संगठन के कई पदाधिकारी के साथ कार्यकर्ताओं का तो ये भी कहना है कि जिला अध्यक्ष ने धृतराष्ट्र की तरह आंखें बंद कर रखी हैं और संगठन में बढ़ते असंतोष, कार्यकर्ताओं की पीड़ा तथा अनुशासनहीनता को नजरअंदाज किया जा रहा है. परिणाम यह है कि कांग्रेस के समर्पित कार्यकर्ता स्वयं को उपेक्षित और अपमानित महसूस कर रहे हैं. विदित हो कि पिछले कुछ महीनों में वरिष्ठ कांग्रेसियों के अपमान, पदाधिकारियों के इस्तीफे, महिला कांग्रेस की नेता मधु गजभिए और पूर्व जिला पंचायत सदस्य रामकुमार नगपुरे से जुड़े विवादों ने भी संगठन की छवि को नुकसान पहुंचाया है.

सबसे लंबे समय तक

नरेन्द्र मोदी प्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित प्रधानमंत्री

शर्मिष्ठा मुखर्जी

भारत में सबसे लंबे समय तक प्रधानमंत्री रहने वाले नेता को लेकर चल रही बहस के बीच, मुझे मेरे पिता, स्वर्गीय प्रणब मुखर्जी की 2014 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अभूतपूर्व जीत के बारे में बताई गई एक दिलचस्प बात याद आती है. उस समय बाबा भारत के 13वें राष्ट्रपति थे. अलग-अलग राजनीतिक विचारधाराओं से जुड़े होने के बावजूद, उनके बीच बहुत अच्छे संबंध थे, जो शायद एक सच्चे लोकतंत्र की वास्तेविक पहचान है.

चुनाव परिणाम आने के बाद, मोदी जी राष्ट्रपति भवन में बाबा से मिलने आए. बातचीत के दौरान, बाबा ने मोदी जी से चुनाव के बारे में उनका विश्लेषण पूछा. उन्होंने उत्तर दिया कि तीन दशकों के बाद किसी राजनीतिक पार्टी को पूर्ण बहुमत मिला है. तब बाबा ने अपने विशिष्ट प्रोफ़ेसर वाले अंदाज़ में पूछा, और क्या? जब मोदी जी चुप रहे, तो बाबा ने बताया कि 2014 का लोकसभा चुनाव इतिहास में अनोखा था, क्योंकि इसमें प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार के तौर पर एक नया चेहरा पहले ही घोषित कर दिया गया था. भारतीय जनता पार्टी को मिला लोगों का अपार समर्थन केवल उनकी पार्टी के लिए नहीं था, बल्कि यह लोगों का नरेन्द्र मोदी को भारत का प्रधानमंत्री बनाने के लिए सीधा जनादेश था. दूसरे चुनावों के विपरीत, जहाँ प्रधानमंत्री का चेहरा या तो मान लिया जाता है पर आधिकारिक तौर पर घोषित नहीं किया जाता; या परंपरा के अनुसार नवनिर्वाचित सांसद उनका चुनाव करते हैं; या यह गठबंधन के गणित से तय होता है और यह प्रक्रिया चुनाव के बाद होती है.

मोदी जी से पहले डॉ. मनमोहन सिंह, जो कभी जन-नेता नहीं रहे, उन्हें तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने चुना था. भारत के दो प्रधानमंत्री, पी.वी. नरसिम्हा राव और एच.डी. देवेगौड़ा - तो प्रधानमंत्री बनने के समय संसद के सदस्य भी नहीं थे. सरल शब्दों में कहें तो, प्रधानमंत्री का चुनाव वरिष्ठ राजनेता करते थे. 2014 भारतीय राजनीति के चुनावी समीकरणों में एक बहुत बड़ा बदलाव था, जहां देश की जनता ने नरेन्द्र मोदी को लगभग राष्ट्रपति चुनाव की ही तरह, स्पष्ट रूप से और बिना किसी संदेह के अपना प्रधानमंत्री चुना.

उल्लेखनीय है कि 2014 से पहले नरेन्द्र मोदी राष्ट्रीय राजनीति में नए थे. उन्होंने गुजरात के मुख्यमंत्री के तौर पर अपने लंबे कार्यकाल के दौरान अपनी एक विशिष्टस पहचान बनाई थी, लेकिन 2014 उनका पहला लोकसभा चुनाव था. यह एक अनोखी बात है कि पहली बार सांसद बनने वाले व्यक्ति ने देश के प्रधानमंत्री के रूप मेंपहली बार संसद भवन में प्रवेश किया. (पुरानी) संसद की सीढ़ियों पर प्रणाम करने का उनका भावुक कदम हृदय को छू लेने वाला ऐसा क्षण था, जिसने करोड़ों भारतीयों के हृदय में अपनी जगह बना ली. चुनाव में विजय का कभी भी कोई एक कारण नहीं होता; यह कई कारकों से जुड़ी एक जटिल प्रक्रिया है. भाजपा का ज़मीनी स्तर पर मज़बूत संगठन, अलग-अलग जातियों और समुदायों तक लगातार पहुँचने की रणनीति, अपनी गलतियों को शीघ्र पहचानना और तुरंत सुधार करने की इच्छाशक्ति—ये कुछ ऐसी मुख्य बातें हैं जिन्होंने विद्यमान भाजपा को चुनाव जीतने वाली एक ऐसी शक्ति बना दिया है, जिसे वर्तमान में रोक पानादुष्कुर लगता है.

हालांकि, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि नरेन्द्र मोदी जी का चेहरा शायद भाजपा का सबसे मज़बूत ट्रंप कार्ड है. लोग उनमें एक ऐसा मज़बूत नेता देखते हैं, जो अपनी प्रतिभा और कड़ी मेहनत के दम पर आगे बढ़ा है, न कि कांग्रेस की तरह वंशवादी विरासत या परिवार-शासित क्षेत्रीय पार्टियों की मज़बूत पकड़ के कारण. एक तरह से नरेन्द्र मोदी भाजपा के पर्याय बन गए हैं. मैं हाल ही में हुए विधानसभा चुनाव के बारे में बंगाल के मित्रों के साथ हुई कुछ बातचीत का उल्लेख करना चाहूंगी. जहां मेरे अपने रिश्तेदार अभी भी कांग्रेस के कट्टर समर्थक हैं और बंगाल में कांग्रेस को मिले मामूली 2.9 प्रतिशत वोट शेयर में उनका भी योगदान था, वहीं मेरे अधिकतर दोस्तों और परिचितों ने भाजपा को वोट दिया था.

चुनाव से पहले, मैं उनसे पूछती थी कि वे किस पार्टी को वोट देंगे. अधिकतर लोगों का उत्तर यही होता था कि वे मोदी को वोट देंगे. मैं उन्हें याद दिलाती थी कि यह विधानसभा चुनाव है और मोदी जी चुनाव नहीं लड़ रहे हैं. उनका उत्तर हमेशा यही होता था—ओई एक-ई व्यापार—यानी बात एक ही है. नरेन्द्र मोदी जी न केवल देश के सबसे लंबे समय तक सेवा करने वाले चुने हुए प्रधानमंत्री हैं, बल्कि शायद स्वदतंत्रता के बाद देश ने जितने भी प्रधानमंत्री देखे हैं, उनमें से वे सबसे मज़बूत नेताओं में से एक हैं. वे गठबंधन सरकारों, जो अपनी सत्ता बनाए रखने के लिए दूसरों पर निर्भर रहती हैं,के उन व्याकवधानों (अक्सर ब्लैकमेल करने वाले तरीकों)का शिकार हुए बिना एक मज़बूत और स्थिर सरकार देने में सफल रहे हैं.

(लेखिका एक स्तंभकार हैं और प्रणब माय फादरः अ डॉटर रिमेंबर्स पुस्तक की लेखिका हैं.)

महिला-बच्चों के खिलाफ बढ़ते अपराध

महाराष्ट्र जैसे प्रगतिशील व सुशिक्षित राज्य में भी महिलाओं का अत्यंत असुरक्षित होना चिंताजनक है. यह ऐसा प्रदेश है जहां यूपी-बिहार जैसा पिछड़ापन नहीं रहा. यहां जीजा माता व सावित्रीबाई फुले का नाम आदर से लिया जाता है तथा अहिल्याबाई होलकर की विरासत का स्मरण किया जाता है. देश की पहली महिला डॉक्टर आनंदीबाई जोशी भी महाराष्ट्र से थीं. इतिहास में महारानी ताराबाई का शौर्य वर्णित है. इन सारे तथ्यों के बावजूद कटु सत्य है कि महाराष्ट्र में 2024 में महिलाओं के खिलाफ 47,954 अपराध दर्ज हुए और 2025 में 8,643 दुष्कर्म के मामले सामने आए जो इसके पहले के वर्ष की तुलना में 703 अधिक थे. स्वयं मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के विवरण तथा महिला व बाल अपराध रोकथाम विभाग की रिपोर्ट के हवाले से विधानसभा में यह जानकारी दी. उन्होंने आश्वस्त किया कि पुलिस आयुक्तों व पुलिस अधीक्षकों के अधीन विशेष जांच दल गठित किए गए हैं तथा 51 भरोसा सेल की स्थापना की गई है जो पीड़ितों की मदद कर सकें. सरकार ने आयुक्त कार्यालय तथा जिला व पुलिस थानों में महिला निगरानी समितियां गठित की हैं तथा निर्भया, दामिनी पथक, पुलिस काका, पुलिस दीदी व बडी कॉप जैसी पहल लागू कर महिलाओं व लड़कियों के खिलाफ अपराध की रोकथाम के कदम उठाए हैं. मामलों के त्वरित निपटारे के प्रयास किए जा रहे हैं. महिलाएं हेल्पलाइन नंबर 103 और 1091 पर तथा बच्चे हेल्पलाइन नंबर 1098 पर संपर्क कर सकते हैं. इमर्जेंसी सेवाओं में मदद के लिए 112 पर फोन किया जा सकता है. मनोधैर्य योजना में दुष्कर्म या एसिड अटैक पीड़ितों को वित्तीय व कानूनी सहायता प्रदान की जाती हैं. महिलाओं के खिलाफ अपराध बढ़ने के पीछे नशाखोरी, अश्लील वीडियो देखना, कानून और समाज का भय न होना जैसी बातें भी हैं. जो दरिंदे मासूमों को भी हवस का शिकार बनाते हैं, उन्हें जिंदा रहने का कोई हक नहीं है. समाज का आत्मकेंद्रित होना भी घातक है. पहले बस्तियों-मुहल्लों में सजगता बनी रहती थी, जो अब नहीं है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

वैन्स की जिंदगी की अजब कहानी एक भारतीय, एक पाकिस्तानी

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, अमेरिका में सिर्फ प्रेसीडेंट ट्रंप ही सनकी नहीं हैं. वाइस प्रेसीडेंट जेडी वैन्स भी उनसे कम नहीं हैं. वैन्स ने कहा कि मेरी जिंदगी में 2 व्यक्ति बेहद महत्वपूर्ण हैं एक तो मेरी भारतीय पत्नी उषा वैन्स और दूसरे पाकिस्तानी फील्ड मार्शल आसिम मुनीर ! ऐसा कहकर उन्होंने भारत और पाकिस्तान के प्रति संतुलन बनाने की बेढब कोशिश की.'

हमने कहा, 'उषा वैन्स अब भी हिंदू धर्म मानती हैं और अपने पति के बार-बार मनाने पर भी उन्होंने कैथोलिक ईसाई धर्म अपनाने से साफ इनकार कर दिया. अब वह जेडी वैन्स के चौथे बच्चे की मां बनने वाली हैं. आगे चलकर उसकी संतानों को तय करना होगा कि मां के समान हिंदू धर्म मानें या पिता की तरह क्रिश्चियन बनें.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, अमेरिका की खुफिया एजेंसी प्रमुख या एफबीआई चीफ तुलसी गबार्ड भी स्वघोषित हिंदू हैं. अमेरिका में लाखों भारतीय रहते हैं जिन्होंने वहां शानदार मंदिर बनवा रखे हैं. न्यू जर्सी में दुर्गा

मंदिर, गायत्री मंदिर, बालाजी मंदिर और स्वामीनारायण मंदिर हैं. फिलहाल अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वैन्स की बात हो रही है, जिन्होंने अपनी जिंदगी के 2 प्रमुख व्यक्तियों के नाम लिए हैं. यदि वैन्स को हिंदी आती तो वह अपनी भारतीय पत्नी को देखकर गा सकते थे- मेरी जिंदगी में आए हो तुम बहार बन के, यूं ही साथ-साथ रहना तुम यार प्यार बन के!

जब इजराइल-ईरान का तनाव उनके दिमाग पर बोझ डाले तो उन्हें यह गीत सुनना चाहिए- जिंदगी कैसी है पहेली हाय, कभी ये हंसाए, कभी ये रुलाए ! 4 वर्षों से जारी रूस-यूक्रेन युद्ध को देखकर वैन्स यह गीत सुन सकते हैं- जिंदगी क्या है, गम का दरिया है, ना जीना यहां बस में, ना मरना यहां बस में, अजब दुनिया है! यदि वह अपनी जिंदगी से तंग आ जाएं तो वह गुनगुना सकते हैं-जिंदगी देने वाले सुन, तेरी दुनिया से दिल भर गया, मैं यहां जीते-जी मर गया!'

हमने कहा, 'नकारात्मक बातें मत कीजिए क्योंकि जिंदगी जिंदादिली का नाम है, मुर्दादिल क्या खाक जिया करते हैं! वैन्स का साथ उनकी जीवनसंगिनी उषा ही निभाएंगी. फील्ड मार्शल मुनीर तो कभी भी उछलकर चीन की गोद में बैठ जाएंगे.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12300

-डॉ सागर खादीवाला

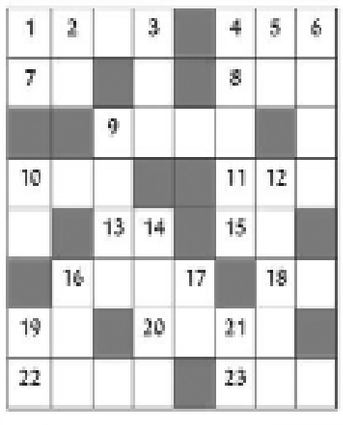

बाएं से दाएं

1. सुगंधित, सुवासित (सं.) 4. बालबच्चे, संतति, औलाद 7. ताप, आंच, कागज की शीट 8. तिलपपड़ी 9. व्यायाम, बहुलता (उर्दू) 10. शिकार, आखेट 11. राजा, राजस्थानी राजाओं की एक उपाधि 13. बुद्धि, समझ 15. चंद्रमा 16. ऊपर से नीचे आना, शरीर के जोड़ या नस का अपने स्थान से हटना 18. कार्य, काम 19. ठोस, दृढ़, कठिन 20. राजपूतों की जाति की एक प्रधान शाखा 22. शिथिलता, थकान 23. कौटिल्य

ऊपर से नीचे

1. पुत्री, बेटी, कन्या 2. ध्वनि, गुंजार 3. कारीगर अंधकार, पाप (सं.) 4. पत्थर गढ़ने या काटने वाला (उर्दू) 5. राजमुकुट (उर्दू) 6. नाक में पहनने का फूल के आकार का आभूषण 9. प्रलय (उर्दू) 10. हिरनी, हरिणी 12. तंत्र-मंत्र द्वारा किसी को वश में करना 14. तिरछा, टेढ़ा 16. वायुयान चालक, जो उड़ता हो 17. नारी, नाल, गर्दन 19. कत्था 21. छोटी खाट या बड़ी मचिया

Solution 12299

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में अनावश्यक वाद विवाद होगा, मन में तनाव रह सकता है, व्यर्थ चिन्ताओं से कार्य में व्यवधान आयेगा, व्यर्थ की भागदौड़ रहेगी, आकस्मिक क्रोध की स्थिति बन सकती है, शुभ समाचार प्राप्त होने का योग है, वर्ष के अन्त में नये स्त्रोतों में वृद्धि होगी, रूके कार्यो में गति आयेगी, धार्मिक कार्यो में व्यय होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को आय के नवीन स्त्रातों में वृद्धि होगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों का अधिकारी के सहयोग से लाभ होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को अनावश्यक विवाद हो सकता हे, सिंह राशि के व्यक्तयों के रूके कार्यो में गति आयेगी, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को शुभ समाचार मिलेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को व्यर्थ वाद विवाद से मुक्ति मिलेगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को भागदौड़ अधिक होगी, अत्याधिक क्रोध की स्थिति न आने दें.

मेष- कानूनी मसले सुलझेंगे, लेनदेन के मामले में अवरोध आ सकता है, कामकाज के प्रति अरूचि रहेगी, आलस्य को त्यागें, व्यवसायिक समस्या का समाधान होगा.

वृषभ- मामूली बात पर कहा सुनी हो सकती है, अधिक भरोसे में कार्य करना अच्छा नहीं है, व्यवसाय के स्वरूप में परिवर्तन होगा, शत्रुओं के कारण दौड़धूप बढ़ेगी.

मिथुन- नए काम की रूपरेखा बनेगी, अधिकारियों का सहयोग न मिलने से परेशानी होगी, बौद्धिक क्षमता अस्थिरता दूर होगी, मित्रों से बैचारिक मतभेद होगा.

कर्क- हौसले के बल पर कठिन कार्यो में सफ्लता मिलेगी, सुख समृद्धि में अभिवृद्धि होगी, मित्रों सेसहयोग प्राप्त रहेगा, वाहन चलाते समय सावधानी बांछनीय.

सिंह- जो लोग आपसे नाराज चल रहे हैं, उनका अच्छा सहयोग मिलेगा, श्रम एवं प्रयास करते समय सावधानी रखें, अनायास विवाद की स्थिति से बचने की कोशिश करें.

कन्या- मानसिक तनाव व आलस्य से छुटकारा मिलेगा, दूसरों के मामले में दखल न दें, आर्थिक समस्याओं का समाधान होगा, पारिवारिक सुख की प्राप्ति होगी.

तुला- भावनात्मक संबंधों में चल रहे गतिरोध से निराशा होगी, दैनिक कार्यो में नियमितता आयेगी, स्वास्थ्य सुखद एवं उत्साहवर्धक रहेगा.

वृश्चिक- आपको नई जिम्मेदारी संभालना पडेगी, व्यवसाय में अधिक प्रयास करने से सफ्लता मिलेगी, मित्रों कुटुम्बियों से विवाद होगा.

धनु- श्रेष्ठजनों की सहायता से भाग्योदय का अवसर मिलेगा, महत्वपूर्ण कार्यो में यश प्राप्त होगा, सुख समृद्धि में वृद्धि होगी, कार्य योजना पूर्ण होगी.

मकर- शुभ समाचार मिलने का योग है, रूका पैसा मिलने से प्रसन्नता होगी, नौकरी संबंधी प्रयासों के लिये दिन अनुकूल एवं शुभ रहेगा, मित्रता उपयोगी रहेगी.

कुम्भ- गलतियां सुधारकर आगे बढ़े, सफ्लता की राह आसान बनेगी, सुख सम्मान एवं वैभव की वस्तुओं की प्राप्ति,योजनाओं का विस्तार होगा.

मीन- नए संपर्को का लाभ मिलेगा, धार्मिक यात्रा का योग है, स्त्री संतान के प्रति चिन्ता रहेगी, पारिवारिक सुख में कमी आयेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक महत्वाकांक्षी, दार्शनिक, विनम्र भाव का होगा, कला साहित्य लेखन एवं मनोरंजन में रूचि रहेगी, जन्म स्थान से दूर भाग्योदय होगा. यात्रा इनके लिये सदैव लाभकारी रहेगी. इनके मित्रों की संख्या सीमित होगी. सम्पादन के कार्य में सफ्लता मिलेगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

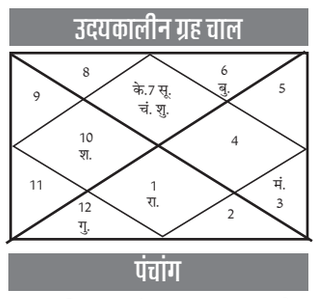

पंचांग

रा.मि. 05 संवत् 2083 शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी भृगुवासरे रात 10/46, विशाखा नक्षत्रे रात 8/29, सिद्ध योगे दिन 1/38, वव करणे सू.उ. 5/13, सू.अ. 6/47, चन्द्रचार तुला दिन 1/57 से वृश्चिक, शु.रा. 7, 9,10,1,2,5 अ.रा. 8,11,12,3,4,6 शुभांक- 9,2,6.

व्यापार भविष्य

शुद्ध ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी को विशाखा नक्षत्र के प्रभाव से कपास, सूत, में मंदी के बाद तेजी का रूख बना रहेगा. तिल, तेल, अरंडी, लोहा, तांबा, पीतल, सरसों, के भाव में स्थिति सामान्य रहेगी. भाग्यांक 3987 है.

SUDOKU 7432

			2				3	
		9		8		2	6	4
1				3	6		9	
4		3						
	8			2			1	
						8		6
	4		7	5				3
3	7	5		4		1		
	2				8			

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सुडोकू 7431

4	6	2	3	5	8	9	1	7
8	1	7	9	2	6	3	5	4
3	5	9	1	7	4	8	2	6
6	4	1	5	3	7	2	8	9
2	7	5	8	4	9	6	3	1
9	3	8	2	6	1	4	7	5
1	2	3	6	9	5	7	4	8
5	9	4	7	8	2	1	6	3
7	8	6	4	1	3	5	9	2